ॐ

श्री गणेशाय नमः

श्री मुक्तिनाथाय नमः

संकलन मार्ग निर्देशकः संहिताशास्त्रि अर्जुन प्रसाद बास्तोला

आज से करीव दो अरब बर्ष पूर्व पृथ्वी में सृष्टि का सुरुवात हुवा था । साथ ही करीव दश करोड बर्ष पूर्व क्षिर समुद्र उठ्कर जव हिमालय बना था, उस के वाद करीव तीन करोड बर्ष सरिसृप युग रहा था और उस के वाद विश्व ब्रह्माण्ड मे सभ्यता की सुरुवात जम्बुदीप के आर्यावर्त सें हुई थी ।

पृथ्वी सात दीपों में विभाजित है । उस में सर्व प्रथम मानव सभ्यता का विकास सरिसृप युग के वाद जम्बू दीप में हुवा था । उस जम्बू दीप मे चार क्षेत्र, चार धाम, सप्तपुरी आदि का वर्णन मिलता है । उस चार क्षेत्रों में प्रमुख क्षेत्र मुक्तिक्षेत्र हिमवत खण्ड हिमालय नेपाल में पड्ता है । वैसे ही नेपाल के पूर्व दिशा में वराह क्षेत्र नेपाल से वहने वाली गण्डकी नारायणी और गङ्गा के सङ्गम में हरिहर क्षेत्र और विश्व प्रसिद्ध कुरुक्षेत्र भारत में पड्ता है ।

शाण्डिल्य ऋषिद्वारा संरक्षित सप्त गण्डकी नदीयों में प्रमुख काली गण्डकी में अवस्थित शालग्राम पर्वत और दामोदर कुण्ड के बीच भाग में त्रिदेव मध्ये के एक देव भगवान ब्रह्मा ने मुक्तिक्षेत्र में यज्ञ किया था । उस यज्ञ के प्रभाव से अग्नि ज्वाला रुप में रुद्र भगवान शिव और शितल जल के रुप में भगवान नारायण बिष्णु उत्पन्न हुए थे । इसी से सर्व पाप विनासिनी मुक्तिक्षेत्र का प्रादुर्भाव हुवा था और उस में सती वृन्दा के श्राप से शिला रुप होने का जो श्राप भगवान श्री बिष्णु को मिला था उस श्राप से मोक्ष (मुक्ति) के लिये शालग्राम शिला के रुप में उत्पन्न हुए थे । इसी लिये इस क्षेत्र का नाम मुक्तिक्षेत्र रह गया है ।

'आर्य' का अर्थ सभ्य है और उसी आर्यों में वहुत सारे ऋषि, महर्षि, मुनी, सिद्ध और योगी हुए थे । उन्हो ने हिमालय को भौगोलिक रुप में चार खण्ड में वर्णन किया था । कश्मिर खण्ड, केदार खण्ड, मानस खण्ड और हिमवत खण्ड । बाबा अमरनाथ कश्मिर खण्ड में, केदारनाथ केदार खण्ड में, कैलाश मान सरोवर मानस खण्ड में और श्री मुक्तिनाथ, पशुपतिनाथ और निलखण्ड हिमवत खण्ड में निवास करते हैं । साथ ही हिमवत खण्ड में सप्त कौशिकी नदी की किनारों में पवित्र बराह क्षेत्र अवस्थित है ।

श्री भगवान मुक्तिनाथ एवम् मुक्तिक्षेत्र की महत्ता पूजा अर्चना वैदिक काल एवम् पौराणिक काल से अनवरत रुप से चली आ रही है । उपनिषद एवम् ब्रह्मसुत्र तथा स्कन्द, वराह, पद्म, ब्रह्माण्ड पूराण लगायत सभी पूराणों में मुक्तिक्षेत्र व शालग्राम अर्चना विधि की विशद वर्णन मिलते है ।

संक्षिप्त में पुराण एवम् पौराणिक ग्रन्थ के आधार में सृष्टि कर्ता ब्रह्मा ने यज्ञ किया था जिस से भगवान शिव अग्नि स्वरुप तथा भगवान बिष्णु जल रुप में उत्पन्न हुए थे । हाल की ज्वाला मन्दीर के अग्नि ज्वाला और जल जो है वही मुक्तिक्षेत्र कहलाए गये । इस प्रकार मुक्तिक्षेत्र में ब्रह्मा, बिष्णु, महेश्वर लगायत सभी देवी देवाताओं निवास करते हैं । मुक्तिक्षेत्र के दर्शन, अर्चना एवम् ध्यान करने से कलीकल्मष पाप निवृत्ती हो जाती है । मुक्तिक्षेत्र सम्पूर्ण पाप नाशिनी एवम् सायुज्य गति प्राप्त करने का सर्वश्रेष्ठ पवित्र धाम मानी जाती है ।

श्री भगवान मुक्तिनाथ नारायण का स्वरुप आदि शालग्राम स्वरुप जो सती वृन्दा के श्राप के कारण भगवान बिष्णु ने गण्डकी नदी में शिला रुप धारण कर के मोक्ष प्राप्त किया था । अन्य शालग्राम भगवान नारायण के आज्ञा स्वरुप विश्वकर्मा ने बज्रकीट के रुप धारण कर के सहस्त्र बर्षों पर्यन्त विभिन्न रुपों एवम् शालग्राम शिला निर्माण कर के शालग्राम पर्वत में प्रकट हुए थे । शालग्राम के रङ्ग रुप अवतार चिन्ह तक के वर्णन पुराणों में वर्णित है ।

ऐतिहासिक काल में आदि शालग्राम गर्भ गृह में स्थापित कर के वाहर भगवान नारायण की मुर्ति मुक्तिनाथ नारायण तथा बुद्ध भगवान लोकेश्वर सादृश भी लगती है । इस कारण से हिन्दूओं तथा बौद्ध धार्मीक जन के पूजा अर्चन के यह आस्था केन्द्र बन गया है । धार्मीक सहिष्णुता का अत्यन्त मनोरम दृश्य यहाँ देख्ने को मिलती है ।

इसी तरह विभिन्न पुराणों में वर्णित कथानुसार भगवान श्री बद्रीनाथ और मुक्तिनाथ के बीच में अनन्य सम्बन्ध हैं क्यों की भगवान बद्रीनाथ के गर्भगृह में शालग्राम भगवान की पूजा होती है । इसी तरह भगवान जगन्नाथ का भी दारु विग्रह होती है औ उन के गर्भ में भी शालग्राम भगवान की पूजा होती है । उसी तरह भगवन पशुपतिनाथ लगायत सभी द्वादश ज्योर्तिलिङ्गों में भी भगवान शालग्राम की पूजा होती है ।

दामोदर कुण्ड की जलधारा और गण्डकी नदी के सङ्गम को काकवेणी कहते हैं । उसी जगह पर तर्पण श्राद्ध करने से २१ कूल के पितरों की मुक्ति मिलती है । धुन्धुकारी नें भी उसी जगह जा कर अपने पितरों की तर्पण श्राद्ध किया था और वो खुद भी मुक्त हो गया था । इसीलिये भी इस क्षेत्रको मुक्तिक्षेत्र कहते हैं ।

जड् भरत का जन्म और तपस्थली गण्डकी नदी के किनारों में था । इसी वजह से हाल के भारत देश का नाम भारत बर्ष भरत खण्ड रहा । इसी तरह रामायण के रचयिता महर्षी वाल्मिकी का आश्रम भी गण्डकी नदी के किनारों में अवस्थित है जीस जगह भगवान श्रीरामजी के त्याग की पश्चात माता सीता नें वहीं पर आश्रय लिया था और लव कुश का जनम् भी हुई थी ।

आज से ३०० बर्ष पहले अयोध्या में जनमे हुये एक अद्भूत बालक जो वाद में स्वामी नारायण की नाम से प्रसिद्ध हुये थे उन्हो नें भी मुक्तिक्षेत्र और काकवेणी के मध्य में एक शिला में कठोर तप कर के सिद्धि प्राप्त की थी । आज उन का स्वामी नारायण सम्प्रदाय दो पन्थों में विभाजित है । एक पन्थ ने विश्व में जगह जगह पर अनेकों अति सुन्दर अक्षरधामों का निर्माण किया हुवा है । और दोनों सम्प्रदाय विश्व में आर्थिक रुप से सम्पन्न सम्प्रदाय माने जाते हैं । यह सव भगवान श्री मुक्तिनाथ की ही कृपा है ।

श्रीमद्भागवत महापुराण आदि ग्रन्थों के अनुसार कलीयुग के पाँच हजार बर्ष वाद गङ्गा आदि नदीयां अपवित्र हो जायेंगी और सिर्फ पानी रह जायेंगी । केवल गण्डकी नदी कलीयुग के दश हजार बर्ष पर्यन्त पवित्र रहेंगी ।

अन्त में, मुक्तिक्षेत्र हिन्दू एवम् बौद्ध धर्म के महान एवम् पुरातन धार्मीक आस्था केन्द्र है तथा मुक्तिक्षेत्र एवम् भगवान मुक्तिनाथ समस्त जगत् कल्याण के लिये धरा में अवतरित हैं ।

ॐ जय बाबा मुक्तिनाथ ! जय हो ! जय हो ! जय हो !

(लेखन सहयोगी: सरोज बास्तोला “जीवनामृत”)